वान थ्यूनेन

Von Thunen theory of Agricultural Location

/Monday वानथ्यूनेन की कृषि अवस्थिति मॉडल (1826) व्याख्या करें, सीमाएँ (आलोचनात्मक परीक्षण) करें वर्तमान प्रासंगिकता बताएं (भारत के संदर्भ में, वैश्विक संदर्भ में)

Q - वानथ्यूनेन के कृषि अवस्थिति मॉडल की व्याख्या करें तथा उन सीमाओं को बताए जिसके आधार पर इस सिद्धांत की आलोचना की जाती है।

Q - कृषि अवस्थिति की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए वान थ्यूनेन की कृषि अवस्थिति सम्बन्धी दशाओं की व्याख्या करें तथा यह स्पष्ट करें कि यह सिद्धांत किस प्रकार वर्तमान कृषि प्रतिरूपों के संदर्भ में प्रासंगिक बना हुआ है।

Q - वान थ्यूनेन की अवस्थिति मॉडल की आलोचनात्मक परीक्षण करें।

i - कृषि अवस्थिति मॉडल का उद्देश्य एवं कृषि अवस्थिति की अवधारणा

ii - वान थ्यूनेन का कृषि अवस्थिति मॉडल - परिचय, आधार, उद्देश्य

- वानथ्यूनेन के अवस्थिति मॉडल की मान्यताए
- वानथ्यूनेन अवस्थिति प्रारूप (6 संकेन्द्रीय वलय प्रारूप)
- कृषि अवस्थिति प्रारूप (6 संकेन्द्रीय वलय प्रारूप)
- कृषि की 6 पेटियों का निर्धारण, बाजार के चारों ओर

a - दुग्ध, सब्जी फल पेटी
b - ईंधन की लकड़ी की पेटी
c - गहन कृषि पेटी
d - फसल चारा परती पेटी (3 खेत प्रणाली)
e - फसल चारा परती पेटी जहां फसल क्षेत्र कम है।
f - पशुपालन पेटी (Map)

iii - पेटियों की सीमांकन / निर्धारण - अधिकतम लाभ / तुलनात्मक लाभ के आधार पर सीमांकन किया

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

लाभ = विक्रय मूल्य - (परिवहन लागत + उत्पादन लागत)
P = V - (T + E) Map

- सीमांकन विधि, ग्राफ / Diagram, लकड़ी का उदाहरण

iv - 6 पेटियों की व्याख्या
v - संशोधन (वान थ्यूनेन द्वारा)
a - नौपरिवहन योग्य नदी
b - प्रतिस्पर्धी या बाजार केन्द्र
c - भूमि की उर्वरता में भिन्नता (Map)

मूल्यांकन → सकारात्मक पक्ष (मॉडल का प्रत्यक्ष महत्व
कमियाँ → मान्यता के आधार, व्याख्या की कमियाँ / मॉडल की कमियाँ
वर्तमान प्रासंगिकता → मॉडल की प्रायोगिकता (प्रत्यक्ष) नवीन संदर्भ में

निष्कर्ष →
अवस्थिति मॉडल - किसी भी कार्य के लिए उचित स्थान के चयन का आधार
↓
एक समस्या

कार्य - कारक विविध
↓
एक साथ नियोजित रूप से उपयोग करना और एक स्थान पर एकत्रित करना
↓
चुनौती
लेकिन सभी कारकों को एक साथ करना असम्भव है
आधारभूत कारकों को महत्व दें
शेष कार्यों का निवेश करना

कृषि अवस्थिति से तात्पर्य - फसलों के लिए उचित कृषि भूमि का चयन
↓
तुलनात्मक लाभ
→ भूमि उर्वरता (उर्वर), सिंचाई, श्रम, पशु परिवहन, बाजार, तकनीकि, पूंजी, विपणन, वित्तीय प्रबंधन / सरकारी नीतियाँ, सामाजिक संरचना, शीतागार, जलवायु

1826 - द० जर्मनी
तुलनात्मक लाभ पर
कृषि का आर्थिक विश्लेषण
- आर्थिक लगान, कृषि गहनता, कृषि प्रतिरूप
तकनीकि आदर्श
कृषि भूगोल
↓
कृषकों को लाभकारी कृषि
↓
जागरूक
↓
बाजार मूल्य / माँग
↓
फसल की कृषि

कृषि अवस्थिति मॉडल के अंतर्गत कृषि फसलों एवं कृषि कार्य के लिए उचित स्थान के चयन के आधारों को इस प्रकार स्पष्ट किया गया है ताकि कृषि लाभकारी हो सके और कृषकों को अधिकतम लाभ की प्राप्ती हो।

इस संदर्भ में वान थ्यूनेन ने ~~कृषि सर्वप्रथम~~ सर्वप्रथम 1826 में कृषि अवस्थिति मॉडल प्रस्तुत किया जो मुख्यतः तुलनात्मक लाभ पर आधारित है। इन्होंने द० जर्मनी के कृषि प्रतिरूपों के अध्ययन के आधार पर कृषि कार्य का अवस्थिति विश्लेषण प्रस्तुत किया। इसमें यह माना गया कि कृषकों को उन्हीं फसलों को प्राथमिकता देनी चाहिए जिनसे तुलनात्मक लाभ की प्राप्ती अधिक हो क्योंकि किसी भूमि पर विविध प्रकार के फसलों की खेती की जा सकती है लेकिन उन्हीं फसलों की कृषि की

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

वाली मांडियों जिनको जाना आवश्यक हो।

इसी तरह वान थ्यूनेन ने कृषकों को लाभदायी कृषि के लिए प्रेरित किया एवं बाजार माँग या मूल्य के अनुसार फसलों के परिवर्तन की सलाह दी। वान थ्यूनेन के मॉडल में कृषि का आर्थिक विश्लेषण पूर्णतः तकनीकी आधारित किया गया। इसमें आर्थिक लगान, कृषि गहनता, कृषि प्रतिफल जैसे आर्थिक शब्दावलियों का प्रयोग और व्याख्या का प्रयास किया गया जो बाद के वर्षों में कृषि भूगोल के विकास का प्रमुख आधार बना। वास्तव में कि 19वीं शताब्दी के प्रारम्भ का यह मॉडल अपने उद्देश्यों के अनुरूप वर्तमान में भी प्रासंगिक बना हुआ है हालांकि बदलती हुई वैश्विक अर्थव्यवस्था एवं कृषि की प्रवृत्तियों के साथ इस सिद्धांत की सीमाएँ भी क्रमशः दृष्टिगत होती गयी लेकिन कृषि अवस्थिति मॉडल के रूप में यह वर्तमान में भी मान्यता रखता है।

वान थ्यूनेन का मॉडल निम्न मान्यताओं पर आधारित है-

Ⓜ कृषि अवस्थिति के विश्लेषण के लिए एकांकी प्रदेश की स्थिति को स्वीकार किया जहाँ भौतिक भौगोलिक एवं सामाजिक आर्थिक समरूपता मिलती है। ऐसे समरूप प्रदेश में एक मात्र बाजार स्थित है जो कृषि उत्पादों का क्रय विक्रय करती है। परिवहन का साधन एक मात्र घोड़ा गाड़ी है तथा दूरी व भार के अनुपात में परिवहन लागत में ईकाई वृद्धि होती है तथा कृषक

Scanned with CamScanner

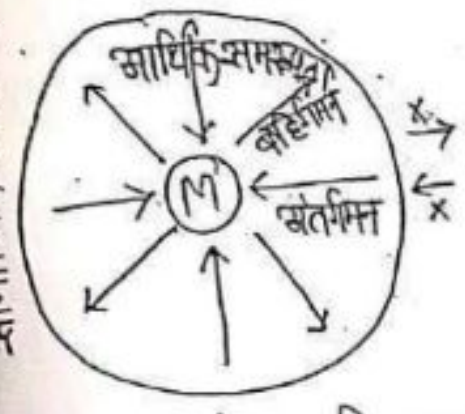

Scanned with CamScanner